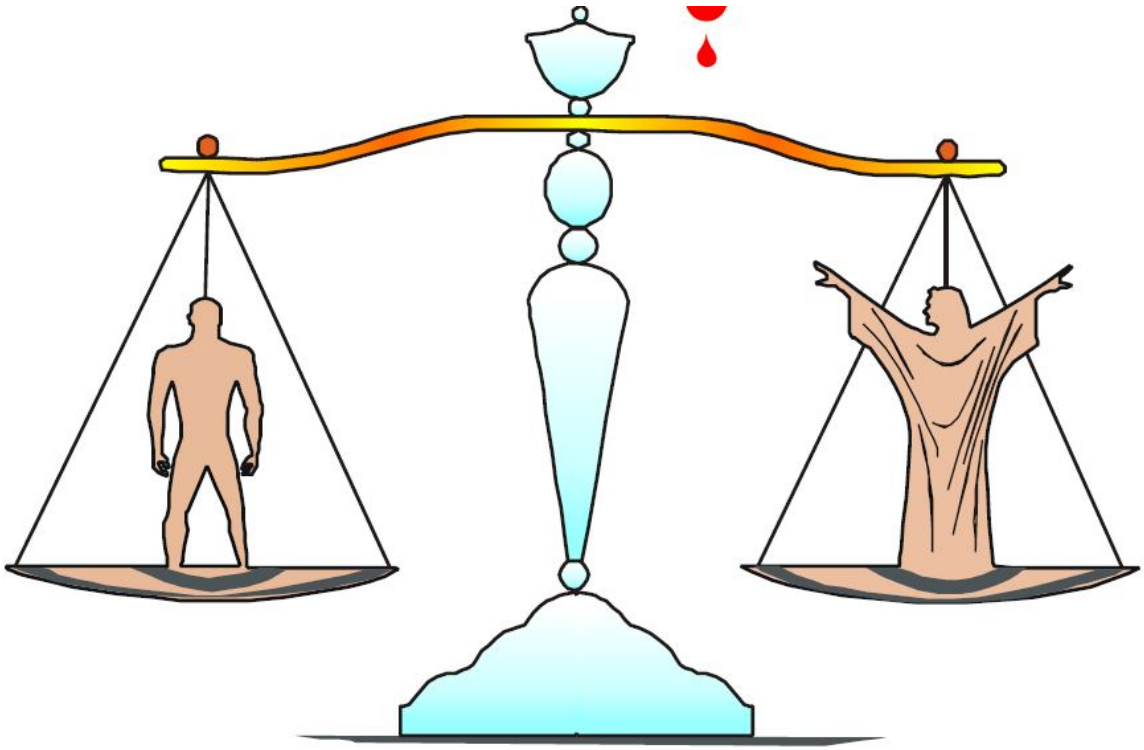

कृपया अपनी बाईबल के हर एक वचन को ध्यान से और पूरी तरह से पढ़ें।

ज्यादातर वचन अंग्रेजी की किंग्स जेम्स वर्शन की बाईबल से लिए गए हैं।

पिछले पाठ में हमने "**क्रूस का रहस्य**" देखा और प्रभु यीशु ने **यूहन्ना 12:32** वचनों में जो कहा था उसका मतलब समझा कि "सब को अपने पास खीचूँगा", इसका मतलब है "**छुड़ौती**"--"**किसी के बराबर समतुल्य कीमत**"। जिसे देने के लिए प्रभु यीशु आये थे। इसके बारे में उन्होंने इन वचनों में बताया भी है --

मरकुस 10:45 ..."पर इसलिये आया, कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपना प्राण दे"॥

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

और इस वचन में "**बहुतों**" का मतलब है **पूरी** मानवजाति जिसे हमने इन वचनों में देखा --

1 तीमुथियुस 2:5, 6 "क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया"...।

हाँ! यह "छुड़ौती" या बराबर का समतुल्य मूल्य एक मनुष्य "आदम" के लिए था --जिसके द्वारा पूरी मानवजाति ने विरासत में मृत्युदण्ड पाया था!!

ये बात हमने बहुत स्पष्ट रूप से इन वचनों में पढ़ ली थी -

1 कुरिन्थियों 15:21, 22 "क्योंकि जब मनुष्य के द्वारा मृत्यु आई; तो मनुष्य ही के द्वारा मरे हुओं का पुनरुत्थान भी आया। और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे"

हाँ! पिछले पाठ में हमने **छुड़ौती के दाम** के बारे में गहराई से पढ़ा था जिसे यीशु ने दिया... लेकिन आज हम छुड़ौती के परिणामों के बारे में पढ़ेंगे... या दूसरे शब्दों में हम "**छुड़ौती के कार्यों**" के बारे में पढ़ेंगे।

हाँ! एक मनुष्य आदम से पूरी मानवजाति पर मृत्युदण्ड आ गया लेकिन "**दूसरे आदम**" के बलिदान के द्वारा, जो की **दूसरा परिपूर्ण मनुष्य** था, उसके द्वारा पूरी मानवजाति को मृत्यु से छुटकारा मिल गया और अब उन्हें फिर से जीने का हक़ है जिसे हम इन वचनों में पढ़ते हैं -

1 कुरिन्थियों 15:22 ..."वैसा ही मसीह में सब जिलाए जाएंगे"।

इसी को <u>एक</u> के लिए <u>एक</u> का सिद्धान्त कहते हैं।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

आइये हम देखें कि यह सिद्धान्त कैसे कार्य करता है?

इसके बारे में हम इन वचनों में पढ़ते हैं --

इब्रानियों 7:9, 10 “तो हम यह भी कह सकते हैं, कि लेवी ने भी, जो दसवां अंश लेता है, अब्राहम के द्वारा दसवां अंश दिया। क्योंकि जिस समय मलिकिसिदक ने उसके पिता से भेंट की, उस समय यह अपने पिता की देह में था”

☞ **इसका क्या मतलब है?**

लेवी याकूब के बारह पुत्रों में से **एक** पुत्र था। याकूब इसाक का पुत्र था और इसाक अब्राहम का पुत्र था।

हाँ! लेवी अब्राहम का बड़ा परपोता था!

यहाँ लेवी के बारे में कुछ ख़ास था! वह लेवी जातियों का पिता था --जिन्हें तम्बू में परमेश्वर की सेवा करने के लिए चुना गया था और **<u>जिनका इस्राएलियों के देश में कोई भाग न था</u>**।

☞ इसलिए ऐसा था कि लेवी जाति के लोग बाकि की **11** जातियों से **1/10** या **दशमांश पाते** थे। लेवी ने खुद कभी भी **दसवाँ अंश नहीं** दिया था बल्कि हमेशा दसवाँ अंश केवल लिया था!

लेकिन इस वचन में हम यह देखते हैं कि प्रेरित पौलुस यह कह रहे हैं कि जब अब्राहम ने मलिकिसिदक को "**दसवाँ अंश**" दिया, तो हम ये कह भी सकते हैं कि लेवी ने भी जो अभी तक जन्मा ही नहीं था, जो कि **अब्राहम की देह** में था, **<u>उसने भी दसवाँ अंश दिया!!</u>**

☞ **यही है... “एक के लिए एक” का सिद्धान्त!!**

इसी तरह, “आदम में” **पूरी मानवजाती** को पाप में गिना जाता है और वे मृत्युदण्ड में आते हैं, वे जो अभी तक नहीं जन्मे हैं, वे “**आदम की देह में**” थे अदन की वाटिका में

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

जब आदम ने पाप किया था, लेकिन जब **छुटकारे के दाम** में **<u>आदम</u>** के लिए **छुड़ौती दी गई**, तो उसके साथ-साथ पूरी मानवजाति को भी **छुटकारा मिल गया उस पाप और मृत्युदण्ड से जो कि आदम पर आया था**।

...जिसे पूरी मानवजाति ने विरासत में पाया था।

यही **परमेश्वर की महान दिव्य योजना** है **पूरी** मानवजाति के लिए जिसे अब हम देखेंगे। आइये इस योजना के बारे में हम इन वचनों में पढ़ें -

रोमियों 8:20, 21 "क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई। कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी"।

☞ इस वचन का क्या मतलब है?

जिस प्रकार की भाषा में यह वचन लिखा गया है, कुछ अटपटा सा लगता है।

आइये हम फिर से इस वचन को पढ़ें और समझने की कोशिश करें -

रोमियों 8:20 "क्योंकि सृष्टि अपनी इच्छा से नहीं पर आधीन करने वाले की ओर से व्यर्थता के आधीन इस आशा से की गई"

☞ हाँ, इस वचन में "सृष्टि" का मतलब है, **पूरी मानवजाति**।

☞ उन्हें "व्यर्थता के आधीन" किया गया था, या दूसरे शब्दों में उन्होंने **<u>पाप और मृत्युदण्ड को विरासत में पाया है</u>**।

☞ ये "अपनी इच्छा से नहीं" हुआ इसका मतलब यह है कि हर **एक** मनुष्य को इस मामले में व्यक्तिगत पसन्द **नहीं** दी गई थी और न ही उनसे निजी तौर पे कोई सलाह की गई थी।

☞ ऐसा "उनके द्वारा" यानि परमेश्वर ने खुद अपनी योजना के अन्तर्गत किया था। **ये वचन उस समय को दर्शाता है जब कि "आदम में सब मरते हैं"**।

☞ **कोई यह पूछ सकता है**–"कि क्या परमेश्वर के लिए ऐसा करना ठीक है या **न्यायपूर्ण** है"?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

हकीकत में अक्सर ऐसा होता है कि माता पिता बच्चे के जन्म लेने से **पहले** ही उसकी **स्कूल, कैरियर**, **प्रशिक्षण,** आदि की योजना बनाते हैं, अपने बच्चे की पसन्द पूछे बगैर!! --सभी माता पिता अच्छे इरादों से ऐसा करते हैं।

☞ ऐसा ही परमेश्वर के साथ भी है जो कि **पूरी** सृष्टि के **"पिता"** हैं, जैसा कि हम वचनों में पढ़ते हैं--

इफिसियों 3:14, 15 "मैं इसी कारण उस पिता के सामने घुटने टेकता हूं, जिस से स्वर्ग और पृथ्वी पर, हर एक घराने का नाम रखा जाता है"।

हाँ! परमेश्वर के पास भी अपने मानवीय बच्चों के लिए **अदभुत योजना** है!

आइये हम इस योजना के बारे में आगे के वचनों में पढ़ते हैं -

रोमियों 8:21 "कि सृष्टि भी आप ही विनाश के दासत्व से छुटकारा पाकर, परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता प्राप्त करेगी"।

जी हाँ! यह **छुटकारा** क्रूस पर के **छुड़ौती** के बलिदान के द्वारा है!

☞ "परमेश्वर की सन्तानों की महिमा की स्वतंत्रता" का मतलब क्या है?

यही वो उद्धार है, जो परमेश्वर पाप और मृत्युदण्ड से छुटकारा दिलाने के लिए पूरी मानवजाति को देने वाले हैं।

यह कार्य परमेश्वर कैसे करेंगे? इसका उत्तर हम इन वचनों में देखते हैं -

1 तीमुथियुस 2:3, 4 "यह हमारे उद्धारकर्ता परमेश्वर को अच्छा लगता, और भाता भी है। वह यह चाहता है, कि सब मनुष्यों का उद्धार हो; और वे सत्य को भली भांति पहिचान लें"।

हाँ! पूरी मानवजाति के लिए यही **परमेश्वर** की योजना है!

☞ इसका मतलब क्या है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

साधारणतय "**सब मनुष्यों का उद्धार हो**" इसका मतलब "**स्वर्ग में ले जाने से**" लगाया जाता है।

यदि इस वचन का यह मतलब है, तो ये बिल्कुल बेतुका लगेगा कि **परमेश्वर सभी मनुष्यों** को उनकी वर्तमान नैतिक अवस्था में स्वर्ग ले जाना चाहते हैं!

अवश्य इस बात का **दूसरा** मतलब होगा।

उद्धार के विषय में जो साधारण समझ है उसके अनुसार --**पहले** कोई सत्य को भली भांति पहचान ले और **उसके** बाद "**उसका उद्धार**" हो। लेकिन

1 तीमुथियुस 2:3, 4

वचन में यह क्रम उल्टा है! ऐसा क्यों है?

परमेश्वर की इच्छा यह है कि

पहले "सब मनुष्यों का उद्धार हो" (उन्हें बचाया जाए)

इस बात का क्या मतलब है?

अभी के समय में सब मनुष्य **मृत्युदण्ड** की अवस्था में है!

छुड़ौती के द्वारा **सभी** मनुष्यों का "जी उठना" होगा, जैसा कि इन वचनों में लिखा है–

प्रेरितों 24:15 "और परमेश्वर से आशा रखता हूं जो वे आप भी रखते हैं, कि धर्मी और अधर्मी दोनों का जी उठना होगा"।

हाँ! **सभी मरे हुओं** का पुनरुत्थान (जी उठना) एक बहुत बड़ी **सच्चाई** है।

पुनरुत्थान या जी उठने का क्या मतलब है?

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

यह उपदेश बाईबल में ही सिखाई जाती है, जो कि
किसी भी धार्मिक पुस्तक में नहीं पाई जाती है।

हालाँकि दूसरे धर्म जैसे कि हिन्दू और बौद्ध धर्म **पुनर्जन्म** के द्वारा मृत्यु के बाद **एक और जीवन के बारे में बताते हैं**, जिसमे मनुष्य फिर से गर्भ से पैदा होता है।

मुस्लिम और यहाँ तक कि ईसाईयों में माना जाता है कि "**स्वर्ग**" में **आत्मिक जीवन मिलता** है।

--बाईबल में जो **पुनरुत्थान** की शिक्षा है वह **एकदम अलग** है।

पुनरुत्थान के बारे में बाईबल यह बताती है कि किस तरह परमेश्वर अपनी **परम सामर्थी दिव्य शक्ति** का उपयोग करके मनुष्य को फिर से उसी जीवित अवस्था में **वापस** ले आएंगे **जिसमे वो** मरते समय थे।
जिन लोगों का मरने के बाद **अस्तित्व ही खत्म हो गया था** उन्हें परमेश्वर फिर से एक नई देह देकर और उसी मानसिक अवस्था में जीवित कर देंगें।
जो जैसा मरा था, बिल्कुल वैसा ही परिपूर्ण देह पाकर जीवित हो जाएगा।
मरा हुआ मनुष्य फिर से जी उठेगा। वह वापस परिपूर्ण मनुष्य बनेगा जैसा आदम पाप करने से पहले था।

यह एक अविश्वसनीय चमत्कार है!

वृद्ध लोग वृद्ध अवस्था में जी उठेंगें, जैसा कि वे मरते समय थे,
और जवान लोग भी बिल्कुल वैसे ही जी उठेंगें जैसे वे मरते समय थे।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

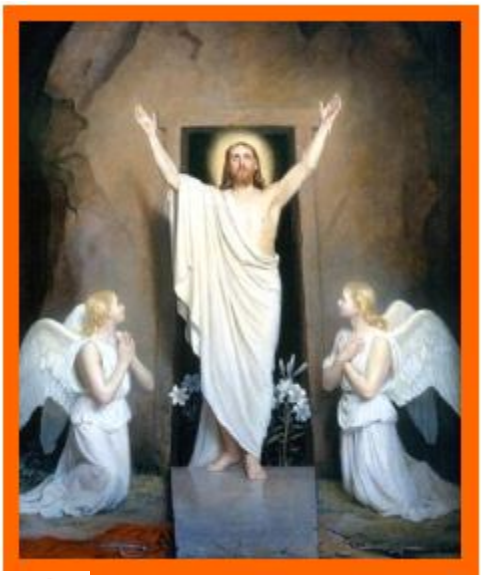

➡ यहाँ तक कि **नवजात शिशु** और **बच्चे** भी बिल्कुल **वैसे** ही जी उठेंगें जैसी अवस्था में **वे मरते समय थे**।

पुनरुत्थान शब्द की उत्पति ग्रीक भाषा के "**ANASTASIS**" शब्द से हुई है (Strongs Greek # 386) और मतलब है "**जीवन के लिए फिर से जी उठना**" या "**फिर से खड़ा होना**"।

➡ अदभुत और चमत्कारी तरीके से इसीलिये "**पुनरुत्थान**" का पूरा मतलब न केवल मरे हुओं का **जी उठना** है, फिर से जीवन पाने के लिए बल्कि ये एक प्रक्रिया है जिसमे लोग उसी **परिपूर्ण** अवस्था में **वापस आयेंगे** जिसे आदम ने वाटिका में खो दिया था।

☞ हाँ! पुनरुत्थान एक **प्रक्रिया** है
जो कि "**मरे हुओं के जी उठने**" से आरम्भ होती है।

इसलिए "पुनरुत्थान" का सही मतलब यह है कि लोग न केवल अदभुत और चमत्कारी तरीके से मरे हुओं में से जी उठेंगे, बल्कि उसके बाद धीरे-धीरे वापस उसी परिपूर्ण अवस्था में लौटेंगें जिसे एक बार आदम ने वाटिका में खो दिया था।

अब सभी को मरे हुओं में से जी उठना है और इसके बारे में प्रभु यीशु मसीह ने भी इन वचनों में स्पष्टता से बताया है -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

यहून्ना 5:28 “इस से अचम्भा मत करो, क्योंकि वह समय आता है, कि जितने कब्रों में हैं, उसका शब्द सुनकर निकलेंगे”

सचमुच में यह एक **आश्चर्यजनक** और **अविश्वश्नीय** मामला है सब के लिए!
यह वह उस महान दिन के बारे में बताता है जब "मरे हुए जी उठेंगे"।
➡ जैसे **अभी** वह समय है जिसमे "**आदम में सब मरते हैं**"
➡ उसी प्रकार एक समय आनेवाला है जिसमे "**मसीह में सब जी उठेंगें**" ।
यह उपदेश केवल **नए नियम** में ही नहीं पढ़ाया जाता है!
☞ हम **पुराने नियम** में भी इसके बारे में पढ़ते हैं! आइये एक वचन में पढ़ें -

यशायाह 26:19 “तेरे मरे हुए लोग जीवित होंगे, मुर्दे उठ खड़े होंगे। हे मिट्टी में बसने वालो, जाग कर जयजयकार करो! क्योंकि तेरी ओस ज्योति से उत्पन्न होती है, और पृथ्वी मुर्दों को लौटा देगी”

हाँ! यह कितना स्पष्ट है! **मरे हुए लोग “मिटटी”** में से **जीवित होंगे**।
☞ इसके बारे में हम फिर से इस वचन में पढ़ते हैं -
दानिय्येल 12:2 “और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे”

जी हाँ! यह कितना स्पष्ट है!!

☞ **इस तरह परमेश्वर सब मनुष्यों को “बचाएंगे” या सबका उद्धार करेंगें -- सभी मरे हुओं के पुनरुत्थान के द्वारा!!**

इसके बाद हम देखते हैं कि परमेश्वर की इच्छा में **अगला कदम क्या है**?
इसके बारे में हम इस वचन में पढ़ते हैं--
1 तीमुथियुस 2:4 ... “और वे सत्य को भली-भाँति पहचान लें”
परमेश्वर के **उद्धार** की प्रक्रिया में यही **दूसरा कदम** है।
पूरी मानवजाति पाप में मरी है और वे वापस "**जी उठेगी**", फिर से जीवन पाने के लिए
☞ ... **उसी अवस्था में (पापी अवस्था में)**

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

<u>तब यह</u> जरूरी है कि उन्हें पाप से **छुटकारा** दिलाया जाये!
यह कैसे सम्भव है? इसके **उत्तर** के बारे में हम इस वचन में पढ़ते हैं -

यहून्ना 17:17 "सत्य के द्वारा उन्हें पवित्र कर: तेरा वचन सत्य है"

हाँ! पाप की अवस्था से और चरित्र का "**पवित्रीकरण**" या "**शुद्धिकरण**" सत्य के वचनों के द्वारा किया जायेगा।

परमेश्वर के वचनों का ज्ञान और सच्चाई पाप के मार्गों से शुद्धिकरण करने के काम में आता है ... सत्य के वचनों के प्रति <u>आज्ञाकारी</u> रहने से पाप मार्गों से छुटकारा मिल सकता है।

उदहारण के लिए बुरी भाषा, स्वार्थ, बईमानी, झूठ बोलना आदि।
लेकिन सारे मरे हुओं के **जी उठने** के बाद उन सभी को "सत्य की पहचान" कराने के लिए सत्य पूरी दुनिया में **फैला होना चाहिए**।

☞ **ये कैसे पूरा होगा?**

इसका उत्तर हम इस वचन में देखते हैं --

हबक्कूक 2:14 "क्योंकि पृथ्वी यहोवा की महिमा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

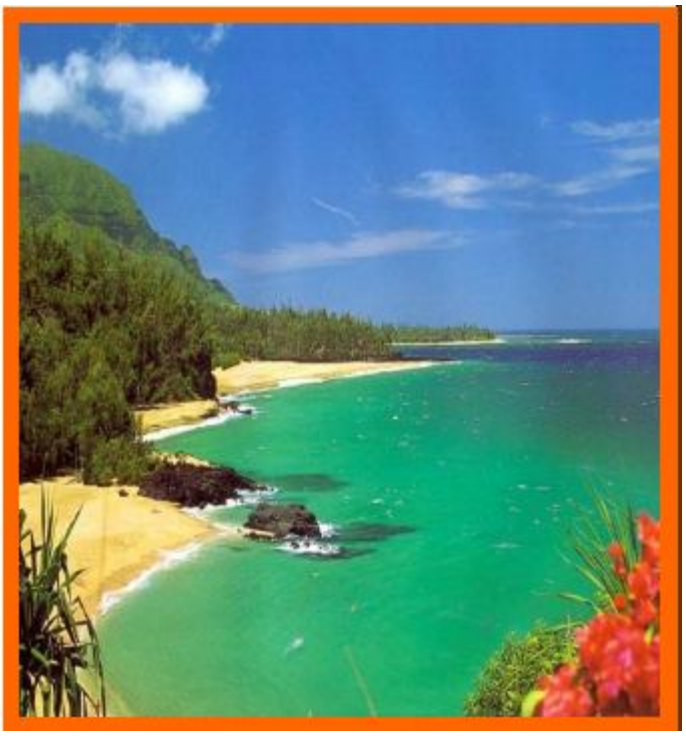

हाँ! पूरी दुनिया यहोवा के वचनों के ज्ञान से भर जायेगी! यानि **बाईबल** के ज्ञान से भर जायेगी!

हम फिर से इसी मामले को दूसरे वचन में भी देखते हैं --
यशायाह 11:19 "मेरे सारे पवित्र पर्वत पर न तो कोई दुःख देगा और न हानि करेगा; क्योंकि पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसा जल समुद्र में भरा रहता है"

आप पुछ सकते हैं कि ऐसा कैसे होगा?
इसके साधन **<u>आज के समय में हमारी आँखों के सामने हैं।</u>**

☞ **क्या आपने देखा है?**
आज के समय में **जानकारी** और **ज्ञान** तेजी से **हर घर में** पहुँच जाता है -- रेडियो, टीवी, इन्टरनेट, वीसीडी, डीवीडी, सीडी आदि के द्वारा।
☞ किताबों की जगह रिकॉर्डिंग्स ने ले ली है।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

यह टेक्नोलॉजी केवल पिछले 70 - 80 सालों से है, जो कि यह दर्शाता है कि हम उस **धन्य समय** के कितने निकट हैं।
सचमुच में यह वचन कैसे **पूरा** होगा इस बड़े और विविध दुनिया में यह **स्पष्ट** होता जा रहा है दिन प्रतिदिन **हमारी आँखों के सामने**!
मानो एक दिन कोई कमरे से बहार आकर देखे की कैमरा, लाइट, जनरेटर, कुर्सियां आदि सब **बहार** रखें हैं लेकिन लोग नहीं हैं!!

कोई क्या सोचेगा?

अहा! हाँ! यही सोचेगा कि यहाँ पर किसी **फिल्म की शूटिंग** जल्द ही होने वाली है!
उन सब वस्तुओं के उपस्थित रहने का दृश्य देखकर यही **निष्कर्ष** निकाला जा सकता है।

☞ बिल्कुल वैसा ही दृश्य **आज** हमारे सामने है जहाँ **आश्चर्यजनक टेक्नोलॉजी** है जो कि किसी भी समाचार को तुरन्त **दूर** तक एक जगह से दूसरी जगह कम समय में फैला सकती है!
हाँ! वह समय नज़दीक है जब -
ये वचन पूरा होगा कि -"पृथ्वी यहोवा के ज्ञान से ऐसी भर जाएगी जैसे समुद्र जल से भर जाता है"

उस महिमामय समय के बारे में इन वचनों में लिखा है -

यिर्मयाह 31:34 और तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, क्योंकि, यहोवा की यह वाणी है कि छोटे से ले कर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; क्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा।

हाँ! इस प्रकार से ऐसा होगा कि सब सच्चाई के ज्ञान को पाएंगे और इस तरह से उन्हें उनके पापों से पवित्र (शुद्ध) बनने का अवसर मिलेगा।

लेकिन कोई ये पूछ सकता है कि -

"जीवित और मरे हुए **दोनों** लोगों के रहने के लिए जगह **कहाँ** है"?

यह एक अच्छा सवाल है!

आइये हम अदन की वाटिका में जो आज्ञा परमेश्वर ने दी थी उसे देखें -

उत्पति 1:28 "और परमेश्वर ने उन को आशीष दी: और उन से कहा, फूलो-फलो, और पृथ्वी में भर जाओ..."

इस वचन से यह स्पष्ट है कि परमेश्वर ने "**पृथ्वी को भरने**" की आज्ञा दी है।

पृथ्वी में जितने लोग आ सकते हैं, उससे **अधिक भरने** की आज्ञा नहीं दी है।

एक सिनेमा थिएटर का मालिक भी जानता है कि उसके पास कितनी जगह है और उसी हिसाब से टिकट बेचता है।

जगह भरने पर **हाउस-फुल** का बोर्ड लगा देता है। तो फिर क्या परमसामर्थी परमेश्वर ये **नहीं** जानते कि उन्हें कब जन्म की प्रक्रिया को **बन्द करना** है ताकि पृथ्वी में जितने लोग समा सकते हैं उससे **अधिक** लोग न जन्में?

इसी तरह एक पेट्रोल पम्प में जो कर्मचारी होता है वह भी गाड़ी की टंकी को "पेट्रोल से भरता" है, उसे बहाता नहीं है।

जब एक कमजोर और अपरिपूर्ण मनुष्य के साथ ऐसा है, तो फिर **पवित्र** और **परमसामर्थी** परमेश्वर के साथ कैसा होगा?

इसके अलावा जब कोई आदम के परिवार की **जनसंख्या** की गड़ना करता है, तो ये पाता है कि -

पूरी दुनिया की जनसंख्या 6 बिलियन थी (1999 में) ।
वर्तमान (2014 में) की जनसंख्या 7 बिलियन है ।

1840 में दुनिया की जनसंख्या ⇨1 बिलियन थी ।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

इसके पहले जनसंख्या कभी भी 1 बिलियन तक नहीं पहुंची थी।

हम लगभग एक अनुमान लगा सकते हैं कि आदम के वंश की पूरी **जनसंख्या** अभी तक

- **25-30 बिलियन** तक रही होगी।

यदि हम इस जनसंख्या को **दोगुना** भी कर दें और केवल भारत में जितना **क्षेत्र** है, उससे **गड़ना** करें तो यह पायेंगे कि केवल **भारत** में ही इतनी जगह है कि **सारे लोग** समा जाएँ।

☞ भारत का कुल क्षेत्रफल लगभग 24,00,000 sq.km है ।

☞ 1 sq.km = 10,00,000 sq.mts (1000 x 1000)

1 sq.mt = 9 ft square or 3 feet x 3 feet

☞ भारत का क्षेत्रफल sq.km है -24,00,000 x 10,00,000 = 2,400,000,000,000 sq mts or 2.4 ट्रिलियन sq.mts

तो आइये हम ये गड़ना करें कि प्रत्येक व्यक्ति को कितनी जगह मिलेगी?

2,400,000,000,000/60,000,000,000 =

40 sq.mtrs प्रति व्यक्ति

या

8mts (24 ft) x 5 mts (15 ft) प्रति व्यक्ति

यह गड़ना तो केवल भारत के क्षेत्रफल के आधार पर की गई है लेकिन इन सब लोगों के रहने के लिए तो पूरी दुनिया है और निश्चय ही परमेश्वर ने बहुत अच्छे से पूरी दुनिया को भरने की योजना बनाई है!!

हम पूरी पृथ्वी का एक खुबसूरत प्राकृतिक दृश्य देखते हैं। जिसमे पहाड़ है, मैदान है, झील है और जंगल आदि हैं। परमेश्वर ने इतनी सुन्दर पृथ्वी को भरने के लिए बनाया है!!

सचमुच में सभी मरे हुओं का जी उठना <u>सम्भव है</u> और इसके लिए परमेश्वर ने बहुत अच्छी तरह से योजना बनाई है!

आइये अब हम एक वचन पर ध्यान करें जिसे ज्यादातर गलत समझा जाता है--

यूहन्ना 5:29 "... और जिन्होंने बुराई की है वे दंड के पुनरुत्थान के लिये जी उठेंगे"

क्या दुनिया में जिन्होंने बुराई की है उनका पुनरुत्थान **केवल दण्ड पाने** के लिए होगा?

☞ क्या प्रभु यीशु की मृत्यु इस बेचारी दुनिया के लिए **कोई आशा** नहीं लाती?
क्या यह सच है? आइये इसका उत्तर हम एक वचन में पढ़ें --

यूहन्ना 3:17 "परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत में इसलिये नहीं भेजा, कि जगत पर दंड की आज्ञा दे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा उद्धार पाए"

देखा! इस वचन में कितना स्पष्ट है!

जी हाँ! पूरी दुनिया तो **पहले से ही** मृत्यु दण्ड में है और परमेश्वर ने अपने पुत्र को जगत के **उद्धार** के लिए भेजा है, न कि इसलिए कि **पहले से ही** दण्डित दुनिया को **दण्ड** मिले!!

जो दण्ड दुनिया पर पहले से ही है वो है मृत्यु का दण्ड और इससे जुड़े सारे दुःख और कष्ट।

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

इस बात को समझने के बाद हम फिर से **यहून्ना 5:29** वचन को देखते हैं और ये महसूस करते हैं कि अंग्रेजी के जिस शब्द का हिन्दी अनुवाद "दण्ड" किया गया है, वो शब्द ग्रीक भाषा के KRISIS शब्द से लिया गया है जिसका मतलब अंग्रेजी में “crisis” है। इस शब्द का मतलब है --**"एक न्याय का समय" या "आपातकालीन"**।

उदाहरण: किसी भी अस्पताल में जब कोई गम्भीर केस आता है तो उसे “crisis” या **"आपातकालीन"** स्थिति कहा जाता है क्योंकि वो जीवन या मौत की अवस्था होती है।

☞ इसी प्रकार मानवजाति की दुनिया भी, जिन्होनें बुराई की है, वो “**न्याय**” या **आपातकालीन** “crisis” के लिए फिर से जी उठेगी।

जी हाँ! वो दुनिया के लिए न्याय का दिन होगा।

और हम इस "**न्याय के दिन**" के बारे में इस वचन में पढ़ते हैं --

प्रेरितों के काम 17:31 “क्योंकि उस ने एक दिन ठहराया है, जिस में वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है और उसे मरे हुओं में से जिलाकर, यह बात सब पर प्रामाणित कर दी है”

हाँ! न्याय के लिए एक **दिन** ठहराया गया है

तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है 🕮 तेरा वचन सत्य है

और **प्रभु यीशु मसीह** को **जज /न्यायी** नियुक्त किया गया है।
उन्होंने अपनी इच्छा से पूरी दुनिया के **उद्धार** के लिए खुद को **बलिदान** कर दिया था!
क्या **न्याय** का यह "**दिन**" 24 घण्टों का है? आइये इसका उत्तर हम वचन में देखें--

2 पतरस 3:8 "हे प्रियों, यह एक बात तुम से छिपी न रहे, कि प्रभु के यहां एक दिन हजार वर्ष के बराबर है, और हजार वर्ष एक दिन के बराबर हैं"

जी हाँ! प्रभु यीशु मसीह का एक दिन 24 घण्टों का नहीं है बल्कि 1000 साल का है!

इसलिए, "न्याय का दिन" = 1000 साल

(हम इस विषय पर पढाई भविष्य के पाठों में करेंगे)

अब कोई यह पूछ सकता है कि ये "**न्याय का दिन**" **कैसा** होगा?
आइये हम कुछ वचनों में देखें -

दानिय्येल 12:2 "और जो भूमि के नीचे सोए रहेंगे उन में से बहुत से लोग जाग उठेंगे, कितने तो सदा के जीवन के लिये, और कितने अपनी नामधराई और सदा तक अत्यन्त घिनौने ठहरने के लिये"

इस वचन का क्या मतलब है?

सबसे पहले तो इस वचन में "**सदा तक**" शब्द का अनुवाद **गलत** हुआ है। इब्रानी भाषा में इसका शब्द "**ओलम**" है जिसका मतलब होता है "**एक युग तक**"।
यह शब्द समय के एक दौर की तरफ इशारा करता है और जरूरी **नहीं** है कि वो अवधि **सदा तक** रहे!
इस वचन में "**घिनौना**" शब्द सभी तरह से **घोटालों**, **भ्रष्टाचार**, **धोखाधड़ी** आदि की और इशारा करता है जिसे लोगों ने गुप्त रूप में बिना किसी की जानकारी के किया है। ये सारी बातों का खुलासा उस समय (न्याय के दिन) में **सब के सामने** हो जायेगा।

इसके बारे में हम स्पष्ट रूप से इन वचनों में पढ़ते हैं -

लूका 12:2, 3 “कुछ ढपा नहीं, जो खोला न जाएगा; और न कुछ छिपा है, जो जाना न जाएगा। इसलिये जो कुछ तुम ने अन्धेरे में कहा है, वह उजाले में सुना जाएगा: और जो तुम ने कोठिरयों में कानों कान कहा है, वह कोठों पर प्रचार किया जाएगा”

सभोपदेशक 12:14 “क्योंकि परमेश्वर सब कामों और सब गुप्त बातों का, चाहे वे भली हों या बुरी, न्याय करेगा”

सचमुच! वह "न्याय का दिन" कैसा अदभुत दिन होगा!

कल्पना करें सारे घोटालों की जो **लोगों में**, **परिवारों** में और **देशों में** हुए है जिनका खुलासा उस दिन होगा!!

☞ आइये अब हम **प्रभु यीशु की छुड़ौती का अगला दृश्य देखें** -

गलातियों 4:4 “परन्तु जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के आधीन उत्पन्न हुआ”

जी हाँ! प्रभु यीशु का जन्म **एक यहूदी** की तरह हुआ और वे **व्यवस्था के आधीन** जन्मे थे!

सारे यहूदियों में **केवल** प्रभु यीशु ही थे जिन्होनें पूरी तरह से व्यवस्था का पालन किया था -

...और इस प्रकार से उसके इनाम को प्राप्त किया था!!

हम व्यवस्था के पालन करने के इनाम के बारे में इस वचन में पढ़ते हैं -

➡ लैव्यव्यवस्था 18:5 “इसलिये तुम मेरे नियमों और मेरी विधियों को निरन्तर मानना; जो मनुष्य उन को माने वह उनके कारण जीवित रहेगा। मैं यहोवा हू”

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

गलातियों 3:12 “पर व्यवस्था का विश्वास से कुछ सम्बन्ध नहीं; पर जो उन को मानेगा, वह उन के कारण जीवित रहेगा”

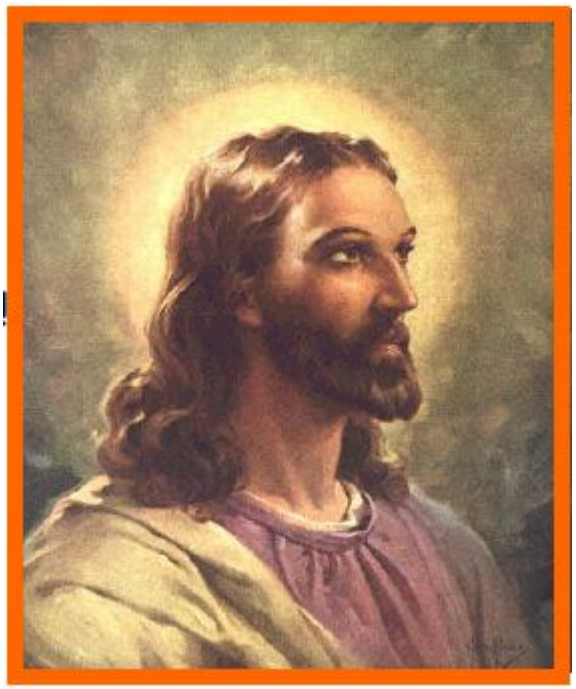

जी हाँ! प्रभु यीशु मसीह ने **अनन्तकाल तक मनुष्य के रूप में जीवित रहने का अधिकार पाया था!**

तब फिर प्रभु यीशु ने क्या किया? इसका उत्तर हम इस वचन में पढ़ते हैं -

यूहन्ना 6:51 “जीवन की रोटी जो स्वर्ग से उतरी मैं हूं। यदि कोई इस रोटी में से खाए, तो सर्वदा जीवित रहेगा और जो रोटी मैं जगत के जीवन के लिये दूंगा, वह मेरा मांस है”

जी हाँ! उन्होंने उस (**मानवीय या “मांस”**) **जीवन के हक़** को "जगत के जीवन के लिए" बलिदान कर दिया।

इसलिए हम एक वचन में प्रभु यीशु की **छुड़ौती** की व्यवस्था के बारे में यह विवरण देखते हैं -

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

1 तीमुथियुस 2:5, 6 "क्योंकि परमेश्वर एक ही है: और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है। जिस ने अपने आप को सब के छुटकारे के दाम में दे दिया; ताकि उस की गवाही ठीक समयों पर दी जाए"

जी हाँ! प्रभु यीशु ने अपने जीने के हक़ को **स्वर्गीय आत्मिक प्राणी** की तरह **नहीं** बलिदान किया बल्कि एक **मनुष्य** की तरह... यानि मसीह यीशु **जो मनुष्य है** वो हमारे लिए बलिदान हुआ!
ये कुछ इस तरह से है कि कोई **दो घरों** का मालिक हो, एक लन्दन में और एक न्यूयॉर्क में!
और एक बार वो मालिक अपने एक घर को दे दे या बेच दे तो उसे वापस नहीं पा सकता। **ऐसा, ही प्रभु यीशु के साथ भी था!**

उनके पास **स्वर्गीय** जीवन का हक़ था और **मानवीय या धरती** पर मनुष्य के रूप में जीने का हक़ था।
और उन्होंने अपने **धरती** पर मनुष्य के रूप में जीने के हक़ को बलिदान कर दिया था...**इसे फिर से कभी भी वापस न लेने के लिए**!

☞ अब से प्रभु यीशु एक मनुष्य **नहीं है** बल्कि एक "**आत्मिक प्राणी**" है या स्वर्गीय प्राणी है जैसा कि प्रेरित पतरस ने स्पष्ट रूप से एक वचन में बताया है --

1 पतरस 3:18 "इसलिये कि मसीह ने भी, अर्थात अधर्मियों के लिये धर्मी ने पापों के कारण एक बार दुख उठाया, ताकि हमें परमेश्वर के पास पहुंचाए वह शरीर के भाव से तो घात किया गया, पर आत्मा के भाव से जिलाया गया"

जी हाँ! इस प्रकार से **अब** प्रभु यीशु आत्मिक देह में हैं क्योंकि उन्होंने अपना परिपूर्ण मनुष्य के जीवन को और **जीने के हक़** को आदम के लिए **छुड़ौती** के दाम में **बलिदान** कर दिया।

2 कुरिन्थियों 5:16 "सो अब से हम किसी को शरीर के अनुसार न समझेंगे, और यदि हम ने मसीह को भी शरीर के अनुसार जाना था, तौभी अब से उस को ऐसा नहीं जानेंगे"

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

इसलिए प्रभु यीशु मसीह भी पक्का करते हैं कि फिर संसार उन्हें **न देखेगा**, क्योंकि अब वो शरीर में है ही नहीं!

इसके बारे में हम स्पष्ट रूप से फिर से एक वचन में पढ़ते हैं -

यूहन्ना 14:19 "और थोड़ी देर रह गई है कि फिर संसार मुझे न देखेगा..."

➡ जी हाँ!! **हैं ना बिल्कुल स्पष्ट!?**

☞ अन्त में हम हमारे प्रभु यीशु और उनकी **छुड़ौती** से जुड़े अगले मामले को देखते हैं -

यशायाह 53:10 "...तब वह अपना वंश देखने पाएगा, वह बहुत दिन जीवित रहेगा..."

इसका क्या मतलब है? ये वचन **यीशु मसीह के बच्चों** या वंश के बारे में बता रहा है! हाँ! यीशु चाहते तो शादी **कर** सकते थे!! वचन के आधार पर यह **गलत नहीं है** और न ही पाप है जैसा कि हम

इब्रानियों 13:4 "विवाह सब में आदर की बात समझी जाए, और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा"

वचन में पढ़ते हैं।

हाल में एक **फिक्शन नावेल** भी लिखी गई थी जिसको बड़े स्तर पर छापा गया था। ये नोवेल का दावा है कि यीशु ने मैरी मगदलीनी से शादी की थी। इस किताब का नाम है

☞ **"THE DA VINCI CODE"**

➡ **क्या यह सच है?**

अच्छा! यीशु मसीह शादी कर सकते थे! **वो गलत नहीं होता!**

☞ लेकिन यहाँ पर एक **महत्वपूर्ण बात है** जिसपर हमें **ध्यान करना** चाहिए!

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

<u>यदि उन्होंने</u> शादी कर ली होती तो एक परिपूर्ण मानवजाति की शुरुआत हो जाती!

(जीवन और स्वाभाव पिता से आता है, माता से **नहीं**, आप **डॉक्टर** से पूछ सकते हैं।) लेकिन यीशु ने शादी नहीं करने का निर्णय लिया, बल्कि उन्होंने आदम के **वंश** को अपना "वंश" के रूप में अपना लिया और वे पूरी मानवजाति के लिए **"अनन्तकाल के पिता"** बन जाएंगे, पुनरुत्थान के समय में।

यशायाह 9:6 “क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ, हमें एक पुत्र दिया गया है; और प्रभुता उसके कांधे पर होगी, और उसका नाम अदभुत युक्ति करने वाला, पराक्रमी परमेश्वर, अनन्तकाल का पिता, और शान्ति का राजकुमार रखा जाएगा”

इसलिए हम निचे के वचनों में यह पढ़ते हैं --
यशायाह 53:10 “...तब वह अपना वंश देखने पाएगा...”

सचमुच में ...कितने अदभुत उद्धारकर्ता हैं!

जल्द ही **<u>पूरी</u>** पृथ्वी उनकी महिमा से **<u>भर</u>** जायेगी, जैसा की हम इस वचन में पढ़ते हैं -

फिलिप्पियों 2:10,11 “कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें। और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है”

जी हाँ! **मरे हुओं के पुनरुत्थान** के द्वारा उचित समय में **सब** को फिर से जीवित किया जायेगा और ये महान सच्चाई सबको बताई जाएगी और फिर सब के **सब** प्रभु यीशु की स्तुति करेंगे; उनके **महान प्रेम** और **बलिदान** के लिए और हर कोई उनके पवित्र नाम की अराधना करेगा!

----आमीन---

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com

For more studies on other subjects Contact: Christ Kingdom E-mail: thekingdomgospel2874@gmail.com